देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 22 ISSUE-3(2) (सितम्बर 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादिका :
डॉ. पूर्णिमा एस.,
डॉ. अनुराधा पी.,
मिस वी. अमुधा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370–375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392

70.	21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397
71.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
72.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
73.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
74.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
75.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
76.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
77.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
78.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
79.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास–साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 366-369

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मंजरी : किन्नर विमर्श

डी श्रीदेवी, शोधार्थी,
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, शोध निर्देशिका,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस टेक्नोलॉजी एंड एडवांस स्टडीज, पल्लावरम, चेन्नई।

साहित्य लोगों की नागरिकता की अभिव्यक्ति है। साहित्यिकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को समाज में घटित हो रही सभी समस्याओं से अवगत कराया है तथा उनके समाधान का मार्ग प्रशस्त किया है। इक्कीसवीं सदी में अनेक साहित्यिकार नारी, वृद्ध, पर्यावरण, किन्नर, किसान आदि विमर्श पर लिख रहे हैं। पहले जमाने में स्त्री और पुरुष के बीच लैंगिक असमानता अधिक रही। इसे तोड़कर स्त्रियों ने अपनी पहचान के लिए आगे आकर सफलता हासिल की। समाज में उचित मान–सम्मान और बराबरी का दर्जा सभी को मिलना चाहिए। फिर भी यह समाज किन्नर को नीच दृष्टि से ही देखता हैं। प्राचीन काल में रामायण, महाभारत, मनुस्मृति जैसे पवित्र ग्रंथों में तो तृतीय लिंग और उनके समुदाय की सकारात्मक भूमिका मिलती है। मुगल शासन में किन्नर को पहरेदार जैसी सुरक्षा से जुड़े कार्यों से लेकर महल की शाही औरतों पर निगरानी के काम में रखा गया था।

डॉ. अभिषेक सिंह के अनुसार, "मुगल शासन में अकबर से लेकर औरंगजेब के काल में सैन्य एवं जिसूस (Eunuch) अधिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई।"[1] स्वतंत्रता के पहले ब्रिटिश सरकार ने उनकी प्रत्येक स्वच्छंद गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए कठोर नियम बनाया। वे तृतीय लिंग को निम्न जाति के लोगों के साथ रखते थे अपराधी मानते थे। आज भी समाज में किन्नरों की स्थिति अच्छी नहीं है। उच्च परिवार के लोग समाज में अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए तृतीय लिंग बच्चे को मार डालने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। इस वैज्ञानिक युग में भी कुछ लोग तृतीय लिंग की उपेक्षित करते हैं। उन्हें अपशकुन मानते हैं। यहां लेखिका मंजरी उपन्यास द्वारा लिंग भेद भाव को समाप्त करके उनको समाज में समान अधिकार देने का संदेश देती है।

सारांश :

रजीता लखनऊ में गोमती नगर के एक वरिष्ठ परिवार की बहू है। रजीता और हेमंत दोनों कॉलेज में साथ पढ़ते थे।दोनों में प्यार होता है और वो शादी करते हैं। हेमंत अपने परिवार का पारंपरिक कपड़े का व्यवसाय करता है और शो रूम की देखभाल करता है साथ ही कलेक्टरी पढ़ाई करता है। रजीता एक तृतीय लिंग बच्ची को जन्म देती हैं। रजीता अपनी बेटी की मंजरी के लिए समाज से संघर्ष करती है। मंजरी अपनी मां की प्रेरणा से पढ़ाई पूरी करती है। वह यूपीएससी चयन में तृतीय लिंग होने के कारण हो रहे अन्याय को न्यायालय तक ले जाती है और अपने समुदाय की पहचान साबित करती है।

परिवार वालों द्वारा अवहेलना :

जोशी अपने परिवार की गरिमा और सम्मान को सर्वोपरि मानते हैं। अस्पताल में तृतीय लिंग बच्ची को जन्म दिए रजीता को ऐसे ही छोड़कर जोशी परिवारवाले वहां से चले गए। उनको अपनी बहू से ज्यादा अपनी प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण हैं। रजीता की साथ और अन्य परिवार वाले तथा पति भी किन्नर बच्चे की खबर सुनकर वहां से चले जाते हैं। "कल्याणी सभी को नर्सिंग होम से खींचकर घर ले गई। बल्कि हेमंत रुऑसा हो गया, राजी की सास भी अड़ गई, पर कल्याणी नहीं मानी तो नहीं मानी।..... कल्याणी ने फतवा दे दिया और सभी लोग राजी को नर्सिंग होम में अकेली छोड़कर रघुराज भवन वापस आ गए।"[2] इतनी शिक्षित होने के बावजूद हेमंत अपने परिवार के साथ मिलकर अपने तृतीय लिंग बच्चे को परिवार से अलग करने के लिए सहमत हो जाता है। जब रजीता ने फोन किया तो वह अपने ही बच्चे को एक अजीब जानवर समझकर उसके बारे में पूछता है। वह कहता है "अपनी बेटी के बारे में? बेटी कैसी बेटी इस ब्रीड के लोग मेल और फीमेल भी होते हैं क्या।"[3] परिवार में बूढ़े से लेकर बड़ों तक अपने परिवार की लाडली बच्ची से ज्यादा अपनी प्रतिष्ठा को मुख्य मानते हैं। वे तृतीय लिंग बच्चे को कलंक मानते हैं। समाज और परिवार उनकी परेशानियों को नहीं समझते। डॉ. भारती अग्रवाल इस समस्या के बारे में लिखती हैं कि, "समाज और परिवार समझ नहीं पाता है कि जो ट्रांसजेंडर वह ट्रांसजेंडर है। उसे उसके रूप में अपनाने में कोई परेशानी नहीं होना चाहिए।.....ट्रांसजेंडर एक तो खुद ही मानसिक तनाव में गुजर रहे होते हैं, दूसरा घर परिवार का दबाव उनकी जिंदगी को दुश्वार कर देता है।"[4] जोशी परिवार वाले रजीता से बच्चे को अनाथालय में छोड़कर आने के लिए जबरदस्ती करते हैं। वे सभी इस समाज में अपने परिवार के सामाजिक स्तर को कायम रखना चाहते हैं। "उन्होने शर्त रखी है बल्कि सभी ने, हेमंत ने भी, कि रजिता या तो बच्ची को अनाथालय में दे दें, और हमारे साथ रहन आ जाए, इस घर की बहू है वह दिल से स्वागत है उसका और नहीं तो डाइवोर्स ले ले म्यूचअल कंसेंट पर।"[5] उच्च वर्गीय शिक्षित परिवार भी किन्नर बच्चे को नहीं अपनाना चाहता। इस प्रकार, एक किन्नर बच्चे का जीवन जन्म से ही कष्टदायक बन जाता है।

मां का संकल्प :

किन्नर लोगों की छोटी सी कमी के कारण उनकी पूरा जिंदगी बर्बाद करना अन्याय है। सच में उनका मस्तिष्क दूसरों की तुलना में बहुत अधिक विकसित है। वे भी आम आदमी की तरह डॉक्टर, पायलट, वैज्ञानिक, इंजनीयर सब कुछ बन सकते हैं। लेकिन समाज की उपेक्षा के कारण किन्नर बिरादरी ने स्वयं को एक अंधेरी कोठरी में कैद कर लिया है। रजीता अपनी किन्नर बेटी को इस समाज का सफल उदाहरण बनाना चाहती है। इसका एक मात्र रास्ता पढ़ाई है। "रजीता का ढृढ विश्वास है कि एक दिन ऐसा अवश्य आएगा, जब मंजरी... ..बहिष्कृत होने योग्य मानकर निश्चिन्त बैठ गए हैं।"[6] अपनी बेटी की परवरिश के लिए रजीता अपने पति को त्यागकर दूसरी शादी करके नरेंद्र को अपने पति बनाती है। वह अपनी बेटी का सामान्य बच्चों की तरह पालन–पोषण करती है। मंजरी अपनी मां की प्रेरणा से अपनी पढ़ाई से लेकर सभी विषयों में अव्वल आती है। लॉ की पढ़ाई के साथ ही साथ यू. पी. एस. सी. परीक्षा की तैयारी भी करती है। रजीता सोचती है "बस एक बार उसका सेलक्शन हो जाए फिर वह अपनी बिरादरी के लोगों की किस्मत पलट देगी। उनकी सोच को बदलने में जी जान लगा देगी मंजरी। किसी को भी ताली बजा बजाकर बाजार में ट्रेन में या किसी भी सार्वजनिक जगह पर पैसा नहीं मांगने देगी वह।"[7] मां से प्रेरित होकर शिक्षा के माध्यम से मंजरी अपनी बिरादरी लोगों की दुःख

भरी जिंदगी को बदलना चाहती है।

सहेलियों द्वारा परेशान :

मंजरी को सरकार से यूपीएससी इंटरव्यू के लिए चयन की खबर मिलती है। रजीता और पूरा परिवार बहुत खुश हो जाता है। मंजरी के मां–बाप उसे कोचिंग के लिए दिल्ली लेकर जाते हैं। वहाँ वे एक अच्छे कोचिंग सेंटर में आईएएस अभ्यर्थियों से बातचीत करते हैं और मंजरी का दाखिला भी करवा देते हैं। नरेंद्र के एक दोस्त की मदद से मंजरी के रहने की व्यवस्था भी करता है। मंजरी के साथ उनकी रूम मेट गार्गी और रेवथी भी परीक्षा की तैयारी कर रही हैं। लेकिन रचना, गार्गी और रेवथी – ये तीनों मंजरी को कुछ अजीब नजरों से देखती हैं। गार्गी अक्सर मंजरी को परेशान करती रहती है। वह पढ़ाई के दौरान बार–बार कमरे में आकर टहलती है, और खोजी नजरों से उसकी किताबें, मैगजीन या उसका कमरा घूरती रहती है। जब भी गार्गी कमरे में आती है, तो कोई न कोई ऐसी हरकत करती है जिससे मंजरी परेशान हो जाती है। एक बार मंजरी ने गुस्से में आकर उसका हाथ पकड़कर उसे कमरे से बाहर निकाल दिया। "देखो, गार्गी मेरा तो यह पहला साल है, मैं एक बार को नहीं भी सेलेक्ट हुई तो चलेगा वैसे भी पहली बार में ही इंटरव्यू कॉल आ गई है..... तुम्हारे अगले दो चार साल भी बर्बाद ही समझो..।"[8] किन्नरों की शारीरिक बनावट के रूप को देखकर उन्हें हमेशा ही मजाक किया जाता है। इससे व्यक्त होता है कि पुरुष ही नहीं स्त्रियों भी उनपर मजाक उड़ाते हैं और जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए बाधा उत्पन्न करते हैं।

मंजरी का आत्मविश्वास :

सामान्यतः किन्नर लोग अपने छोटे से लेकर बड़े विषयों पर बात करने के लिए झिझकते है। किन्नरों अपने आप को हेय दृष्टि से देखने वाले लोगों से बहुत दूर रहते हैं। मंजरी की आवाज न मर्दनी या जनानी, वह न पूरी तरह लड़का न पूरी तरह लड़की इन सभी विसंगतियों की वजह से स्कूल, कॉलेज में अपवाद बन जाती है। लेकिन वह बहुत बहादुरी और आत्म विश्वास के साथ इन सभी का सामना करती है। "उसके पास उसकी मां का दिया हुआ आत्मविश्वास की अथाह सम्पदा है कि लाख बेइज्जती, व्यंग्य, भद्दे मजाक सुनते झेलते रहने के बावजूद भी उसने अपना भेद किसी के सामने नहीं खोला और न विचलित हुई।"[9] जब यूपीएससी चयन समिति ने मंजरी को नियुक्ति से पहले उसके लिंग की पुष्टि के लिए मेडिकल बोर्ड से सर्टिफिकेट लाने को कहा, तो मंजरी ने इस मामले को अदालत में ले जाने का निर्णय लिया। उसने न्यायालय में अपने संघर्षमय जीवन की कहानी और न्याय की मांग को रखा। "लोगों की विद्रूप हॅसी जलालत भरे शब्द, हयूमिलैशन, समाज की मुख्य धारा से अलग कटकर अपनी एक अलग दुनिया बसाकर रहना.....बाप रे बाप!"[10] मंजरी किन्नरों की अपमान भरी कष्टमय जीवन को अदालत के सामने रखती है।

अदालत का फैसला :

मंजरी ने अपने समुदाय की इस दयनीय स्थिति को बदलने के लिए आगे कदम बढ़ाया। वह अपने लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बनना चाहती हैं। वह उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं और बदलाव की दिशा में हर संभव प्रयास कर रही हैं। "इस पर विचार करते हुए मिस मंजरी को उस भूल के लिए कोर्ट उन्हें क्षमा करता है साथ ही उन्हें निर्देश देता है कि जब तक सरकार 'अन्य' केटगरी के बारे सोच विचार करके कोई निर्णय नहीं ले लेती, तब तक मिस मंजरी को 'अन्य' की केटगरी में ही अपनी सर्विस ज्वाइन करनी होगी।"[11] मंजरी

का उद्देश्य है कि उसका समुदाय सम्मान और समान अवसरों के साथ आगे बढ़े। किन्नरों के प्रति सहानुभूति रखते हुए, उनका पूरी तरह से सम्मान करना चाहिए। उन्हें दूसरों से अलग नहीं समझना चाहिए। समाज में कई बदलाव आने के बाद भी किन्नरों के बारे में गलत सोच को मन से हटाना बहुत मुश्किल होता है। कानूनी और सरकारी प्रयासों के बावजूद समाज में किन्नरों के प्रति ग्रणित भाव को हटाना कठिन है। किन्तु मंजरी जैसे दृढ़ निश्चय वाले लोगों के प्रयासों से ही समाज में परिवर्तन आ सकता है।

निष्कर्ष :

लेखिका मंजरी उपन्यास के माध्यम से यह कहते हैं कि मंजरी न केवल उनके अधिकारों की वकालत करती हैं, बल्कि समाज में उनकी स्वीकार्यता और समानता सुनिश्चित करने की दिशा में भी एक सशक्त संदेश देती हैं। यह उपन्यास तृतीय लिंग समुदाय के संघर्ष, संवेदना और संभावनाओं को उजागर करते हुए समाज को सोचने पर मजबूर करता है। तभी सभी किन्नरों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है।

संदर्भ :

1. डॉ. अभिषेक सिंह, हिंदी कथा साहित्य में ट्रांसजेंडर, पृष्ठ सं. 66
2. मालती मिश्रा, मंजरी, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, प्र.सं 2022, पृष्ठ सं. 8
3. वही, पृष्ठ सं. 36
4. डॉ. विनय कुमार पाठक, किन्नर दशा और दिशा, पृष्ठ सं. 115
5. मालती मिश्रा, मंजरी, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, प्र.सं 2022, पृ. सं. 41
6. वही, पृष्ठ सं. 58
7. वही, पृष्ठ सं. 68
8. मालती मिश्रा, मंजरी, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, प्र.सं 2022, पृष्ठ सं. 93
9. वही, पृष्ठ सं. 57
10. वही, पृष्ठ सं. 121
11. वही, पृष्ठ सं. 129

sridevipalani21@gmail.com
9952951435